NEP and Learning Outcome-based Curriculum Framework (LOCF)

For

M.A, Hindu Studies

Pool Course

(To be effective from the Academic Session 2026)

Department of Indian Knowledge and Languages
Gurugram University, Gurugram

(A State Govt. University Established Under Haryana Act 17 Of 2017)

SYLLABUS

M.A. Hindu Studies
1-30

SEMESTER-1
MDC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-01	ज्योतिष शास्त्र-1	251/SKT/MD101	2	0	1	2	0	1	3	15	35	5	20	75

पाठ्यक्रम का विवरण-

ज्योतिष शास्त्र भारत की प्राचीनतम विद्याओं में से एक है। यह वेदों का नेत्र कहा गया है, जो मानव जीवन के भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान प्रदान करता है। यह न केवल ग्रहों और नक्षत्रों की गति को समझाने वाला विज्ञान है, बल्कि यह व्यक्ति के जीवन में आने वाली घटनाओं का भी पूर्वानुमान देता है। ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करना केवल एक विद्या अर्जन करना नहीं है, बल्कि यह जीवन को गहराई से समझने का माध्यम है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य-

- छात्रों को भारतीय ज्योतिष के मूलभूल सिद्धान्तों से परिचिति करवाना, जिससे वे ज्योतिषीय गणनाओं और कुण्डली निर्माण की प्रारम्भिक समझ प्राप्त कर सके।
- शुभ-अशुभ समय का निर्धारणः-मंगल कार्यों जैसे विवाह, गृह प्रवेश, मुहूर्त, यात्रा आदि के लिए शुभ समय का चयन ज्योतिष के द्वारा किया जाता है, जिससे कार्यों की सफलता की संभावना बढ़ जाती है।

इकाई 1

- भारतीय ज्योतिष का परिचय : अर्थ, परिभाषा, इतिहास, महत्व और विभिन्न शाखाओं का अध्ययन।
- ज्योतिष के प्रकारः सिद्धान्त, प्रश्न, होरा, मुहूर्त आदि।

इकाई-2

- **खगोलशास्त्र की मूल बातें:** ग्रह, नक्षत्र, राशियाँ, सौरमण्डल का परिचय, मास, ऋतु, अयनांश, उत्तरायण-दक्षिणायण
- **पञ्चाङ्ग तत्व** : तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण

इकाई-3

- **मुहूर्त विज्ञान-** शुभ कार्यों के लिए मुहूर्त चयन, विवाह, वाहन, व्यापार, गृह प्रवेश, नामकरणादि
- **ज्योतिषीय गणना के साधन-** साफ्टवेयर, मोबाइल ऐप्स का प्रयोग
- **भावों का परिचय -** भावों का सामान्य ज्ञान, कुण्डली निर्माण।

मूल ग्रन्थः-

1. ज्योतिष प्रवेशिका, डॉ. रामाश्रय शर्मा , चौखम्भा / संस्कृत भारती
2. ज्योतिष रत्नमाला, पं. रामयश त्रिपाठी, सरस्वती पब्लिकेशन
3. Basics of Vedic Astrology, डॉ. सूर्यनारायण राव, Motilal Banarsidass
4. How to Judge a Horoscope (Vol 1 & 2) डॉ. बी.वी. रमन, UBS Publishers / BVR Foundation
5. Learn Hindu Astrology Easily, K.N Rao, Vision Publications

सीखने के परिणाम-

- दूसरों का मार्गदर्शन करने की योग्यता:
- करियर और आजीविका के अवसर:
- शुभ समय का निर्धारण (मुहूर्त ज्ञान)

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 4 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 14 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 3 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 7 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल चार प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	14 अंक
द्वितीय प्रश्न	7 अंक
तृतीय प्रश्न	7 अंक
चतुर्थ प्रश्न	7 अंक

SEMESTER-I
AEC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cred its	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-01	**व्यावहारिक संस्कृत-1**	251/HS/AE 101	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

पाठ्यक्रम विवरणः-

संस्कृत भाषा भारत की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। यह न केवल धार्मिक ग्रंथों की भाषा रही है, बल्कि वैज्ञानिक, दार्शनिक, और सांस्कृतिक ज्ञान का भी महत्वपूर्ण माध्यम रही है। आधुनिक युग में जहाँ संस्कृत को प्रायः एक 'पूजनीय भाषा' के रूप में देखा जाता है, वहीं व्यवहारी संस्कृत का भी विशेष महत्व है। यह वह संस्कृत है जो दैनिक जीवन में व्यवहार हेतु प्रयुक्त की जा सकती है। इस पाठ्यक्रम में रचनानुवाद कौमुदी के अत्यधिक विषय समाहित हैं।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- संस्कृत भाषा में धाराप्रवाहता प्राप्त कराना
- दैनिक जीवन में संस्कृत का प्रयोग सिखाना
- संस्कृत संवाद कौशल का विकास कराना
- भाषिक आत्मविश्वास उत्पन्न करना
- शुद्ध उच्चारण और वैयाकरणिक प्रयोग का अभ्यास कराना
- संस्कृत का प्रचार-प्रसार करना

इकाई-1

- संस्कृत सम्भाषण- प्रारम्भिक सम्वाद आदि
- विभक्ति ज्ञान- कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान,सम्बन्ध, अधिकरण एवं सम्बोधन
- शब्दरुप- राम, हरि, भानु, पिता, लता, मति, फल,
- धातुरुप (पाँचों लकार) लट्, लङ्, लृट्, लोट्, विधिलिङ्

इकाई-2

- प्रत्यय, उपसर्ग एवं अव्यय(वाक्यों में प्रयोग)
- साधारण संस्कृत अनुवाद- संस्कृत से हिन्दी एवं हिन्दी से संस्कृत

मुख्य ग्रन्थ-

1. रचनानुवाद कौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृत वार्तालाप (Sanskrit Vartalap) - प्रो. श्यामसुंदर मिश्र
3. संस्कृत भाषा सीखें (Learn Sanskrit Language) - स्वामी श्रीचरण
4. संस्कृत व्यवहारकौशल (Sanskrit Vyavaharakoushal) - डॉ. गिरीश पाण्डेय
5. संस्कृत संवाद प्रबोधिनी (Sanskrit Samvad Prabodhini) - डॉ. विनोद कुमार
6. संस्कृत व्यावहारिक शिक्षा (Sanskrit Practical Education) - प्रो. रवि शंकर शर्मा
7. संस्कृत संवाद साधना (Sanskrit Samvad Sadhana) - स्वामी त्रिपुरसुंदरी
8. व्यवहारिक संस्कृत (Practical Sanskrit) - डॉ. रामकृष्ण शर्मा

सीखने के परिणाम-

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी:

- सरल संस्कृत वाक्यों का निर्माण एवं प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त सामान्य शब्दों, अभिव्यक्तियों एवं क्रियाओं को संस्कृत में व्यक्त कर सकेंगे।
- मूलभूत संस्कृत व्याकरणिक तत्वों (संधि, समास, कारक, लकार, वचन, लिंग आदि) को समझ सकेंगे।
- संस्कृत संवाद, परिचय, अभिवादन आदि के माध्यम से संवाद-क्षमता (communication skill) विकसित कर सकेंगे।
- पाठ्यांशों एवं श्लोकों का सरल संस्कृत में अनुवाद तथा व्याख्या करने में समर्थ होंगे।
- संस्कृत के प्रति रुचि, आत्मविश्वास एवं प्रयोगशीलता विकसित कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 15 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	15 अंक
द्वितीय प्रश्न	10 अंक
तृतीय प्रश्न	10 अंक

SEMESTER-1
VAC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VAC-1	Upanishad and Geeta	251/HS/VA 101	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

Course Description:

This course provides an in-depth study of the Upaniṣads and the Bhagavad Gītā, the two foundational texts of Indian spiritual and philosophical tradition. The Upaniṣads represent the culmination of Vedic wisdom and lay the foundation of Vedānta, while the Bhagavad Gītā synthesizes the core teachings of the Upaniṣads in a dialogic and practical framework. This course explores the philosophical, metaphysical, and ethical dimensions of these texts, highlighting their relevance to individual self-realization, dharma, and the nature of ultimate reality. Emphasis will be placed on key concepts such as ātman, brahman, karma, jñāna, bhakti, and mokṣa.

Learning Objectives:

This course aims at making

- the students acquainted with general outline of Sanskrit literature.
- the learners be familiar with the tradition of Indian Philosophical literature
- with some focus on individual contributors of Sanskrit prose writing.

Unit I: Upanishads

- General Introduction to Upanisads Text
- Classification: Mukhya (Principal) and Minor Upaniṣads
- Philosophical evolution from Veda to Vedānta
- Introduction to Ishavasyopanishad- Karma, Vidya-Avidya, Satya, Atman

Unit: II: Geeta

- Introduction to Geeta: 18 chapters and thematic division (Karma, jñāna, bhakti, Sannyāsa)
- **Karma Yoga**: Niṣkāma Karma, Svadharma, Yajña
- **Jñāna Yoga**: Discrimination (viveka), Self-realization
- **Bhakti Yoga**: Personal Devotion, Surrender, Grace

Essential/recommended reading:

1. भगवद्गीता, शांकरभाष्य अनुवाद सहित, अनुवादक श्री हरिकृष्ण दास गोयन्दका, गीता प्रेस गोरखपुर
2. गीताभाष्यनवाम्बरा डॉ शिवनारायण शास्त्री
3. Valmiki Ramayana Valmiki.iitk.ac.in
4. Ishavasyopnishad Geeta Press, Gorakhpur, 1992

5. Ishavasyopnishad- Swami Sharvananda, Shri RamK rishna Math, Mylapur, Madras, 1943
6. Ishavasyopnishad, Dr. Shashi Tiwari, Bhartiya Vidya Prakashan, Delhi, 1997

Suggested readings

1. Bhagawadgita with the commentary of Shankaracharya A.K. Warrior,
2. Bhagawadgita-Dr. S. Radhakrishnan 3. Srimadbhagavadgītā, The Scripture of Mankind, text in Devanagari with transliteration in English and notes by Swami Tapasyananda. Sri Ramakrishna Math, 1984

Learning outcomes:

The students will learn

- the teachings of Upanisads and Gita
- three major knowledge systems of Traditional Indian Philosophy Sanskrit
- the mantras and verses, prescribed in the course, will help the learners to develop an understanding of the moral and ethical values that will be useful in their day-to-day life.
- They will be familiar with the rich history of Sanskrit Literature.
- This course will enhance their skills of chaste Sanskrit pronunciation as well as competence and performance of the language also.
- This will help them translate and explain the prescribed Sanskrit texts in their native language.

Instructions to External Examiner:

There will be a total of 3 questions in this question paper. The first question will be compulsory, carrying 10 marks, and will be based on the entire syllabus. This question may be objective or subjective in nature. The remaining 2 questions will be asked from different units of the syllabus, and each question will carry 10 marks. Internal choices will be available for each question. It will be compulsory for the students to answer a total of three questions.

TOTAL MARKS: 35 (TE)	**TIME: 2hr**
Question Number	**Marks**
Question Number 1(compulsory)	15 Marks
Question Number 2	10 Marks
Question Number 3	10 Marks

SEMESTER-2
MDC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-2	ज्योतिष शास्त्र -2	251/SKT/ MD201	2	0	1	2	0	1	3	15	35	5	20	75

पाठ्यक्रम का विवरण-

ज्योतिष शास्त्र केवल भाग्य जानने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक विज्ञान, कला और दर्शन का समुच्चय है जो व्यक्ति को आत्मबोध और जीवन में संतुलन प्रदान करता है। ज्योतिष विद्या केवल एक भविष्य बताने की कला नहीं है, बल्कि यह जीवन को दिशा देने वाली एक प्राचीन और शक्तिशाली ज्ञान परम्परा है। इसका सही और वैज्ञानिक उपयोग मानव समाज के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हो सकता है। ज्योतिष वेदों का अङ्ग है। इसे सीखने से व्यक्ति भारतीय परम्परा, धर्म और संस्कृति के मूल तत्वों को समझ पाता है। इसका अध्ययन व्यक्ति को बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और आर्थिक रूप से समृद्ध बना सकता है – बशर्ते वह इसे श्रद्धा, अभ्यास और उचित दृष्टिकोण से सीखे।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

"विद्यार्थियों को ज्योतिष विद्या की मूल अवधारणाओं से परिचित कराना एवं उन्हें प्रारम्भिक स्तर पर कुण्डली निर्माण व विश्लेषण में दक्ष बनाना।"

- ज्योतिष शास्त्र की मूलभूत समझ विकसित करना
- ग्रह, नक्षत्र और राशियों के सिद्धान्तों को समझाना
- कुंडली निर्माण और विश्लेषण में प्रावीण्य प्रदान करना
- जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए भविष्यवाणी कौशल विकसित करना
- ज्योतिष को व्यावसायिक रूप से अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना
- भारतीय ज्ञान परम्परा से विद्यार्थियों को जोड़ना
- सावधानी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

इकाई -1: ग्रह, राशि एवं भावों का विशिष्ट अध्ययन -

- नवग्रहों का स्वभाव (शुभ-अशुभ), उच्च- नीच ग्रह, अवस्था एवं दृष्टि
- प्रत्येक राशि के गुण, स्वभाव, तत्व एवं राशि स्वामी ग्रह

- द्वादश भावों का अर्थ और महत्व
- प्रत्येक भावों मे ग्रहों का फल

इकाई - 02:

- दशा प्रणालीः - विंशोत्तरी दशा और अन्य प्रमुख दशा प्रणालियों का परिचय।
- गोचर - ग्रहों के गोचर का प्रभाव और उसका विश्लेषण

इकाई - 03:

- प्रश्न कुण्डली बनाना
- सामान्य फलादेश
- राशि के अनुसार जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव
- विवाह, शिक्षा, करियर, स्वास्थ्य आदि का ज्योतिषीय विश्लेषण

मूल ग्रन्थः

1. बृहत जातक, वराहमिहिर, व्यवहारिक फलित ज्योतिष का आधार, चौखम्भा प्रकाशन
2. फलदीपिका (Phaladeepika), मन्त्रेश्वर,ग्रहों के फल, योग, दशा विस्तार, चौखम्भा संस्कृत सीरीज
3. जातकपारिजात, वैद्यनाथ दीक्षित, भाव विश्लेषण और योग विचार,चौखम्भा कृष्णदास अकादमी
4. Bhavartha Ratnakar, रामानुज, भावफल की व्यावहारिक दृष्टि, Motilal Banarsidass
5. KP Astrology Books (Krishnamurthi Paddhati), के.एस. कृष्णमूर्ति, आधुनिक दृष्टिकोण से फल कथन, K.P. Press, Chennai

सीखने के परिणाम-

1. दूसरों का मार्गदर्शन करने की योग्यता
2. करियर और आजीविका के अवसर
3. रोग और संकटों की पूर्व चेतावनी
4. आध्यात्मिक विकास
5. पारिवारिक और सामाजिक लाभ
6. निर्णय क्षमता में वृद्धि
7. तनाव और भ्रम से मुक्ति
8. भारतीय संस्कृति से जुड़ाव

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 4 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 14 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 3 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 7 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल चार प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	14 अंक
द्वितीय प्रश्न	7 अंक
तृतीय प्रश्न	7 अंक
चतुर्थ प्रश्न	7 अंक

SEMESTER-2

AEC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-02	**व्यावहारिक संस्कृत-2**	251/HS/AE201	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	**50**

पाठ्यक्रम विवरणः-

संस्कृत भाषा भारत की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। यह न केवल धार्मिक ग्रंथों की भाषा रही है, बल्कि वैज्ञानिक, दार्शनिक, और सांस्कृतिक ज्ञान का भी महत्वपूर्ण माध्यम रही है। आधुनिक युग में जहाँ संस्कृत को प्रायः एक 'पूजनीय भाषा' के रूप में देखा जाता है, वहीं व्यवहारी संस्कृत का भी विशेष महत्व है। यह वह संस्कृत है जो दैनिक जीवन में व्यवहार हेतु प्रयुक्त की जा सकती है। इस पाठ्यक्रम में रचनानुवाद कौमुदी के अत्यधिक विषय समाहित हैं।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- संस्कृत भाषा में धाराप्रवाहता प्राप्त कराना
- दैनिक जीवन में संस्कृत का प्रयोग सिखाना
- संस्कृत संवाद कौशल का विकास कराना
- भाषिक आत्मविश्वास उत्पन्न करना
- शुद्ध उच्चारण और वैयाकरणिक प्रयोग का अभ्यास कराना
- संस्कृत का प्रचार-प्रसार करना
- लोकवाणी और काव्यवाणी के बीच सेतु निर्माण कराना
- संस्कृत को जीवंत भाषा बनाना

इकाई1

बोलचाल की संस्कृत

दैनिक जीवन में प्रयुक्त संस्कृत वाक्य

I. परिचय, विनय, प्रश्न, उत्तर, आदेश आदि वाक्य शैली
II. व्यावसायिक, शैक्षिक, पारिवारिक और सामाजिक संवाद
    - उदाहरण- भवतः नाम किम्?
    - भवान् कुत्र निवसति?

- भवती किं पठति?

इकाई-02

संस्कृत अनुवाद कौशल

हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद

- संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद
- अंग्रेजी से संस्कृत अनुवाद
- संस्कृत में भाषण की तैयारी
- शुद्ध उच्चारण एवं अनुवाद: **नीतिशतकम् के प्रथम १० श्लोक**

मुख्य ग्रन्थ-

1. रचनानुवाद कौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृत वार्तालाप (Sanskrit Vartalap) - प्रो. श्यामसुंदर मिश्र
3. संस्कृत भाषा सीखें (Learn Sanskrit Language) - स्वामी श्रीचरण
4. संस्कृत व्यवहारकौशल (Sanskrit Vyavaharakoushal) - डॉ. गिरीश पाण्डेय
5. संस्कृत संवाद प्रबोधिनी (Sanskrit Samvad Prabodhini) - डॉ. विनोद कुमार
6. संस्कृत व्यावहारिक शिक्षा (Sanskrit Practical Education) - प्रो. रवि शंकर शर्मा
7. संस्कृत संवाद साधना (Sanskrit Samvad Sadhana) - स्वामी त्रिपुरसुंदरी
8. व्यवहारिक संस्कृत (Practical Sanskrit) - डॉ. रामकृष्ण शर्मा
9. भर्तृहरि। (2018). *नीतिशतकम्* (सम्पा. P. V. Kane). मोतीलाल बनारसीदास.

सीखने के परिणाम-

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी:

- संस्कृत में संवाद, पत्रलेखन, अनुच्छेद लेखन तथा कथन करने में अधिक दक्ष होंगे।
- विविध लकारों, वाच्यों, कारकों तथा समासों का व्यवहारिक प्रयोग कर सकेंगे।
- सरल एवं मध्यम स्तर के गद्यांशों का संस्कृत से हिंदी/अंग्रेज़ी और हिंदी/अंग्रेज़ी से संस्कृत में अनुवाद करने में सक्षम होंगे।
- शुद्ध एवं प्रभावशाली संस्कृत वाक्य रचना द्वारा भावाभिव्यक्ति कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 15 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	15 अंक
द्वितीय प्रश्न	10 अंक
तृतीय प्रश्न	10 अंक

SEMESTER-2

SEC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
SEC-01	**भारतीय वास्तुशास्त्र**	251/HS/SE201	1	0	1	1	0	1	2	5	20	5	20	50

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों, दर्शन तथा सांस्कृतिक महत्त्व का समग्र परिचय प्रदान करता है। इसमें भारतीय परंपरा में विकसित स्थान, संरचना एवं आवास-विज्ञान से संबंधित अवधारणाओं का अध्ययन किया जाएगा। पाठ्यक्रम में मानसार, मयमतम्, विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र तथा बृहत्संहिता जैसे शास्त्रीय ग्रंथों के आधार पर वास्तु के दार्शनिक आधार, स्थापत्य सिद्धांत, मंदिर निर्माण पद्धतियों तथा नगर-नियोजन की परंपराओं का विश्लेषण किया जाएगा।

यह पाठ्यक्रम वास्तु के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों पक्षों का अध्ययन कराते हुए समकालीन वास्तुकला, सौन्दर्यबोध तथा अनुष्ठानिक स्थलों के निर्माण में उसके अनुप्रयोग को भी स्पष्ट करता है। विशेष रूप से मण्डल-रचना, वास्तुपुरुष मण्डल, दिशानिर्धारण, मापन-पद्धति तथा वास्तु के ब्रह्माण्डीय एवं पारिस्थितिक संबंधों पर बल दिया जाएगा।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- विद्यार्थियों को भारतीय वास्तुशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों से परिचित ।
- शास्त्रीय वास्तु ग्रंथों तथा उनमें वर्णित स्थान एवं संरचना संबंधी निर्देशों का विश्लेषण।
- वास्तु के आध्यात्मिक, ब्रह्माण्डीय एवं पारिस्थितिक आधारों का विश्लेषण ।
- भारतीय परंपरा में मंदिर स्थापत्य, गृह-योजना तथा नगर-नियोजन का अध्ययन।
- समकालीन निर्मित परिवेश में वास्तु सिद्धांतों की प्रासंगिकता का अन्वेषण ।

इकाई-I : वास्तु के आधारभूत एवं दार्शनिक सिद्धांत

- वास्तु, वास्तुपुरुष तथा पंचमहाभूत की अवधारणा।
- दिशाओं (दिशा) एवं उनके अधिष्ठाता देवताओं (दिक्पालों) का महत्त्व।
- स्थान, काल, पर्यावरण एवं मानव जीवन के मध्य सामंजस्य।
- वास्तु का ब्रह्माण्ड विज्ञान (Cosmology) एवं धर्म से संबंध।
- वास्तुपुरुष मण्डल: प्रतीकात्मकता एवं ज्यामितीय संरचना।

इकाई-II : वास्तुसौख्यम् - I तथा मंदिर स्थापत्य एवं अनुष्ठानिक स्थल

वास्तुसौख्यम्

- प्रथम भाग - वास्तु प्रयोजन तथा वास्तु स्वरूप (श्लोक 4-13)।
- द्वितीय भाग - भूमि परीक्षण, दिक्साधन तथा निवास हेतु स्थान-निर्वाचन।
- तृतीय भाग - गृह-पर्यावरण, वृक्षारोपण तथा शल्यशोधन (श्लोक 31-49 एवं 74-82)।

मंदिर स्थापत्य एवं अनुष्ठानिक स्थल

- नागर, द्राविड़ तथा वेसर स्थापत्य शैलियाँ।
- गर्भगृह, शिखर, मण्डप एवं प्राकार का प्रतीकात्मक महत्त्व।
- मंदिर हेतु स्थल-निर्वाचन (देश-निर्णय), अधिष्ठान (प्लिन्थ) की योजना एवं दिशानुसार अभिमुखीकरण।
- स्थापति, शिल्पी एवं शास्त्र की भूमिका तथा महत्त्व।

Text Books/ References Books:

1. वास्तु सौख्यम्, टोडरमल्ल, (सम्पा०) कमलाकांत शुक्ल, शिक्षण शोध प्रकाशन संस्थान , वाराणसी, 1996
2. मुहूर्तचिन्तामणि, श्रीराम, पीयूषधारा टीका सहित, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली
3. मुहूर्तचिन्तामणि, श्रीराम, श्रीदुर्गा पुस्तकभण्डार, प्रयागराज
4. भारतीय वास्तु शास्त्र, शुकदेव चतुर्वेदी, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
5. वास्तुप्रबोधिनी, विनोद शास्त्री और सीताराम शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
6. बृहद् वास्तुमाला, राम मनोहर द्विवेदी और ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 2012
7. वास्तुसार, देवीप्रसाद त्रिपाठी, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 2015

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर विद्यार्थी:

- भारतीय वास्तुशास्त्र के ब्रह्माण्डीय (Cosmological) एवं दार्शनिक आधारों को समझ सकेंगे।
- वास्तु के प्रमुख शास्त्रीय ग्रंथों का विश्लेषण कर उनमें प्रयुक्त तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली की व्याख्या कर सकेंगे।
- वास्तु सिद्धांतों का अनुप्रयोग करते हुए मंदिरों, अनुष्ठानिक संरचनाओं तथा गृह-योजनाओं का अध्ययन एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- भारतीय स्थापत्य सौन्दर्यशास्त्र को उसके सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिक संदर्भों में समझने तथा उसका मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।

- समकालीन वास्तुकला में वास्तुशास्त्र की प्रासंगिकता एवं सीमाओं का समालोचनात्मक परीक्षण एवं विवेचन कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 10 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 5 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 20 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	10 अंक
द्वितीय प्रश्न	5 अंक
तृतीय प्रश्न	5 अंक

SEMESTER-3

MDC

Cours e Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credit s	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-03	Basic Principles of Āyurveda	251/SKT/MD301	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

Course Description:

Āyurveda is the most ancient yet still a vibrant and living healthcare system of India. Rooted in the Vedic tradition, it offers a holistic approach to health that integrates body, mind, and spirit. This course introduces students to the fundamental principles of Āyurveda, including its philosophy, basic doctrines (like the *Tridoṣa* theory), diagnostic methods (*Doṣa*, *Dhātu*, *Mala*, *Agni*, *Srotas*), and lifestyle recommendations.

Learning Objectives

Āyurveda is the most ancient but still a living healthcare system of India. This course will introduce students to the basic concepts of the Science of Āyurveda. The major objective of the course is to make the learners understand the basic principles and concepts of preventative and curative medicines, health maintenance, diet and nutrition, usage of commonly used spices and herbs and therapeutic procedures in Āyurveda

Unit I: Introduction to Āyurveda

- History of Āyurveda in the pre-Charaka period, the two schools of Āyurveda: Dhanvantari and Punarvasu.
- Ācāryas of Āyurveda: Charaka, Sushruta, Vagbhata, Madhava, Sharngadhara and Bhavamishra

Basic Principles of Āyurveda

- The Pancamahābhūtas: Ākāśa (Space), Vāyu (Air), Tejas or Agni (Fire), Jala (Water) and Prithivī (Earth).
- The Triguṇas: Sattva, Rajas and Tamas.
- The Tridoṣas: Vāta, Pitta and Kapha.
- The Saptadhātus: Rasa (fluid), Rakta (blood), Māṁsa, Meda (fat) Asthi, Majjā and Śukra.
- The Trayodaśāgnis: Jatharāgni (gastric fire), Saptadhātvagni and Pancabhūtāgni.
- The Trimalas: Purīṣā (faeces), Mūtra (urine) and Sveda (sweat).

Unit II: Eight branches of Āyurveda (Aṣṭāṅga Āyurveda):

- Kāycikitsā (General Medicine)
- Kaumārabhṛtya (Pediatrics)
- śalyatantra (Surgery)
- Śālākya-Tantra (Ent. and Ophthalmology)
- Bhūta Vidyā (Psychiatry Medicine).
- Viṣa Vijñāna (Toxicology).
- Rasāyana (Rejuvenates).

- Vājīkaraṇa (Aphrodisiac).

Unit III: Lifestyle and Preventive Medicine:

- Understanding Health and Disease in Āyurveda
- Ayurvedic SvasthaVṛtta (Preventive Medicine): Seasonal regimen & Social Conduct and its effect on health.
- Carakasaṁhitā – Sūtra-sthānam (Tasyāśitīyādhyāya)
- Regimen of Six Seasons (Ṛtucharyā) : Hemanta (Early Winter), Śiśira (Winter),Vasanta
- (Spring), Grīṣma (Summer), Varṣā (Rainy) and Śarada (Autumn).

References:

1. त्रिपाठी, ब. (सम्पा.). (2017). *चरक संहिता* (खंड 1–3). वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत संस्थान।
2. शास्त्री, अ. (सम्पा.). (2012). *सुश्रुत संहिता* (खंड 1–2). वाराणसी: चौखम्भा ओरिएंटलिया।
3. शर्मा, एस. के. (2015). *आयुर्वेद परिचय* (भाग 1 और 2). वाराणसी: चौखम्भा भारतभवन।
4. बालकृष्ण, आ. (2020). *दैनिक जीवन में आयुर्वेद.* हरिद्वार: दिव्य प्रकाशन।
5. कपूर, र. (2018). *भारतीय चिकित्सा पद्धति: आयुर्वेद.* नई दिल्ली: आर्य प्रकाशन।
6. Sharma, P. V. (Trans.). (1996). Charaka Samhita (Vol. 1–3). Varanasi: Chaukhambha Orientalia.
7. Bhishagratna, K. K. (Trans.). (1998). Sushruta Samhita (Vol. 1–2). Varanasi: Chowkhamba Sanskrit Series Office. (Original work published 1907)
8. Dash, B. (2001). A handbook of Ayurveda. New Delhi: Concept Publishing Company.
9. Lad, V. (2002). Textbook of Ayurveda: Fundamental principles (Vol. 1). Albuquerque, NM: The Ayurvedic Press.
10. Lad, V. (1984). Ayurveda: The science of self-healing: A practical guide. Santa Fe, NM: Lotus Press.
11. Green, A. (2000). Principles of Ayurveda: The only introduction you'll ever need. London: Thorsons.

Learning outcomes

Graduates who read this course should be able to know the ancient tradition of Indian Medicine system, which talks about not only to the physical health but also a healthy lifestyle. After reading this paper students will know the history of Āyurveda through original sources of ancient medicine system as enshrined in the Sanskrit texts like Charaka Saṁhitā, Śuśruta Saṁhitā, Aṣṭānnga Hridaya etc. and they will also get the basic knowledge of eight departments of Āyurveda. Second section of this paper is related to ancient

Instructions to External Examiner:

There will be a total of 4 questions in this question paper. The first question will be compulsory, carrying 14 marks, and will be based on the entire syllabus. This question may be objective or subjective in nature. The remaining 3 questions will be asked from different units of the syllabus, and each question will carry 12 marks. Internal choices will be available for each question. It will be compulsory for the students to answer a total of four questions.

TOTAL MARKS: 50 (TE)	**TIME: 2hr**
Question Number	**Marks**
Question Number 1(compulsory)	14 Marks
Question Number 2	12 Marks
Question Number 3	12 Marks
Question Number 4	12 Marks

SEMESTER-3

VAC

Cours e Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credit s	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VAC-2	Indian Kāvya: Tradition and Literary Heritage.	251/HS/V A301 (New paper)	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

Course Description:

This course offers a comprehensive exploration of the Indian *Kāvya* tradition, situating poetic heritage as a vital component of Hindu studies and Indian Knowledge Systems. Students will delve into the foundational aesthetic theories of *Rasa* and *Bhava*, learning how these concepts elevate literature beyond mere storytelling to a transformative experience. The curriculum analyzes the *Itihāsa* and *Mahākāvya* traditions, demonstrating how classical masterpieces synthesize artistic brilliance with the core *Purusharthas* of *Dharma*, *Artha*, *Kama*, and *Mokṣa*. Furthermore, the course examines *Kāvya* as a sophisticated medium for transmitting profound metaphysical inquiries, such as the mechanisms of *Bandhana* and *Punarjanma*, into the lived cultural consciousness. By bridging ancient poetic wisdom with the pedagogical objectives of NEP 2020, students will evaluate the ongoing relevance of these texts in shaping modern identity. This 2-credit course aims to cultivate a deeper appreciation for the interplay between classical literary aesthetics and the philosophical frameworks that define Hindu thought.

Course Objectives:

- To introduce students to the fundamental principles of Sanskrit aesthetic theory, specifically the concepts of *Rasa* and *Bhava*, as established in the foundational traditions of Indian literary criticism.
- To analyze the *Itihāsa* and *Mahākāvya* traditions, enabling students to evaluate how classical texts synthesize aesthetic excellence with the ethical frameworks of *Dharma*, *Artha*, *Kama*, and *Mokṣa*.
- To explore the role of *Kāvya* as a sophisticated medium for the transmission of metaphysical inquiries—including *Punarjanma* and *Bandhana*—within the broader context of Indian Knowledge Systems.
- To foster a critical appreciation of the enduring relevance of classical Indian literature in contemporary society, aligning with the holistic and value-based educational goals outlined in NEP 2020.

Unit 1: Foundations of Kāvya and Aesthetic Theory

- **Defining Kāvya:** Exploration of the etymological meaning of *Kāvya* and the classical definition.
- **The Rasa Framework:** Introduction to Bharata Muni's *Natya Shastra* and the role of *Rasa* (aesthetic flavor) and *Bhava* (emotion) in shaping the Hindu worldview.
- **Purusharthas in Literature:** Analyzing how the four goals of life—*Dharma, Artha, Kama,* and *Mokṣa* - serve as the thematic structure for classical narratives.
- **Kāvya and Indian Knowledge Systems (IKS):** Investigating how *Kāvya* serves as a medium for transmitting complex philosophical concepts like *Punarjanma, Bandhana,* and *Mokṣa* in an accessible, aesthetic form

Unit 2: The Mahākāvya Tradition and Itihāsa

- **The Source of Inspiration:** Examining the *Itihāsa* (Ramayana and Mahabharata) as the primary *Upjeevya* (source material) for subsequent Sanskrit *Mahākāvyas*.
- **Classical Masters:** A study of the works of Kalidasa and Bharavi to understand the elevation of royal and divine narratives into high art.
- **Didacticism vs. Artistry:** Discussing the tension and harmony between moral instruction and poetic brilliance in traditional Hindu literature.
- **Nature and Environmental Ethics:** Exploring the profound connection between human emotion and the natural world as depicted in classical poetic descriptions.
- **Contemporary Relevance:** Assessing the role of traditional literature in shaping modern cultural identity and its application in contemporary pedagogy following NEP 2020 guidelines.

Course Outcomes:

Upon successful completion of the course, students will be able to:

- Understanding Aesthetic Foundations: Students will be able to demonstrate a comprehensive understanding of the Rasa and Bhava frameworks and their application in evaluating classical literary works.
- Critical Textual Analysis: Students will be able to critically analyze Itihāsa and Mahākāvya traditions to identify the integration of Purusharthas—Dharma, Artha, Kama, and Mokṣa—within complex narrative structures.
- Philosophical Synthesis: Students will be able to explain how Kāvya serves as a vehicle for transmitting metaphysical concepts such as Punarjanma and Bandhana.
- Application to Modern Pedagogy: Students will be able to apply the values and ethical frameworks derived from classical literature to contemporary societal issues, in alignment with NEP 2020 objectives.

References:

1. "The Nāṭyaśāstra of Bharatamuni" (Translated by Manomohan Ghosh): This is the indispensable primary source for understanding the foundations of *Rasa* and *Bhava* theory, which is critical for Unit 1.
2. "Kāvyaprakāśa of Mammaṭa" (Edited and translated by G.N. Jha): A cornerstone text in Sanskrit literary criticism that provides a systematic technical analysis of *Kāvya* structure and function.
3. "Classical Sanskrit Literature" by A.B. Keith: A definitive scholarly guide that explores the evolution of the *Mahākāvya* tradition and the stylistic genius of poets like Kalidasa and Bharavi.
4. "The Sanskrit Epics" by J.L. Brockington: This provides a comprehensive historical and analytical overview of the *Itihāsa* (Ramayana and Mahabharata), essential for understanding the *Upjeevya* tradition discussed in Unit 2.
5. "Rasa Theory" by P.J. Marshall: An excellent academic resource for students to bridge the gap between classical aesthetic theory and its philosophical implications.
6. "Hinduism: A Very Short Introduction" by Kim Knott: Useful for grounding students in the broader context of *Purusharthas* and the metaphysical worldviews that *Kāvya* often addresses.
7. "The Bhagavad Gītā: Doctrines and Contexts" (Various scholarly editions/commentaries): Essential for studying the philosophical synthesis of *Bandhana* and *Mokṣa* mentioned in image_eff301.png and discussed throughout the syllabus.
8. "Indian Knowledge Systems" by Kapil Kapoor: A modern text that offers essential insights into how traditional Sanskrit literature functions as a transmitter of cultural values in line with NEP 2020 pedagogical objectives.

Instructions to External Examiner:

There will be a total of 3 questions in this question paper. The first question will be compulsory, carrying 15 marks, and will be based on the entire syllabus. This question may be objective or subjective in nature. The remaining 2 questions will be asked from different units of the syllabus, and each question will carry 10 marks. Internal choices will be available for each question. It will be compulsory for the students to answer a total of three questions.

TOTAL MARKS: 35 (TE)	**TIME: 2hr**
Question Number	**Marks**
Question Number 1(compulsory)	15 Marks
Question Number 2	10 Marks
Question Number 3	10 Marks

SEMESTER-3

SEC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
SEC-2	Basic Skills for Research Paper and Dissertation	251/HS/SE301	1	0	1	1	0	1	2	5	20	5	20	50

Course Description:

This course aims to equip postgraduate students with the fundamental academic and methodological skills required for scholarly writing and research in the field of Humanities and Indian Knowledge Systems. The focus will be on understanding the components of a research paper, thesis writing, referencing styles, critical review, and ethical standards of academic writing. The course will train students in identifying a research problem, conducting literature review, developing arguments, citation practices, and preparing for viva-voce and academic presentation.

Course Objectives:

- To introduce students to the basics of academic research methodology and writing.
- To develop skills in constructing a research question or hypothesis.
- To train students in referencing styles, citation practices, and plagiarism avoidance.
- To enable students to prepare well-structured research papers and dissertations.
- To familiarize students with peer-reviewed journals, indexing, and publication ethics.

Unit 1: Introduction to Research and Methodology

- Nature and scope of research in Humanities
- Types of research: descriptive, analytical, historical, interdisciplinary
- Choosing a research topic: feasibility, relevance, originality
- Research questions, hypothesis, and objectives
- Qualitative and quantitative approaches

Unit 2 A: Structuring a Research Paper or Dissertation

- Components of a research paper: abstract, introduction, literature review, methodology, analysis, conclusion. Formatting and writing styles (APA, MLA, Chicago, IKS referencing), Footnotes, endnotes, tables, charts, bibliography
- Identifying and reviewing scholarly sources- Primary and secondary sources in Sanskrit and Indian traditions

B: Research Ethics, Plagiarism, and Presentation

- Academic integrity and ethics in research
- Plagiarism: detection tools and avoidance
- Copyright, fair use, and citation
- Writing for publication: journals, conferences, book chapters

Suggested Readings / Reference Texts:

1. **Kothari, C.R.** – *Research Methodology: Methods and Techniques*
2. **R.P. Bhatnagar & R. Bhargava** – *Research Methodology in Humanities*
3. **Jayant Parikh** – *Shodh Pravidhi* (for Sanskrit-based research methods)
4. **UGC Guidelines for Plagiarism and Research Ethics**
5. **डॉ. संजय अग्रवाल -"शोध पद्धति: शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र एवं मानविकी के लिए"** प्रकाशक: साहित्य भवन पब्लिकेशन्स
6. **डॉ. जयंत पारीक -"शोध प्रविधि"** प्रकाशक: विद्यार्थी ग्रंथमाला, राजस्थान
7. **डॉ. रमेश चन्द्र -"शोध प्रविधि एवं रिपोर्ट लेखन"** प्रकाशक: अग्रवाल पब्लिशिंग हाउस
8. **डॉ. अर्चना शर्मा -"मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में शोध पद्धति"** विषयवस्तु: साहित्य, इतिहास, दर्शन, समाजशास्त्र जैसे विषयों में शोध की बुनियादी समझ।

Course Outcomes:

Upon completion of this course, students will be able to:

- Formulate research questions and plan a dissertation structure effectively.
- Identify, evaluate, and organize relevant literature for their topic.
- Write clear, coherent, and structured academic content in thesis or article format.
- Apply correct citation and referencing practices while avoiding plagiarism.
- Confidently present their work in academic forums and prepare for publication.

Instructions to External Examiner:

There will be a total of 3 questions in this question paper. The first question will be compulsory, carrying 10 marks, and will be based on the entire syllabus. This question

may be objective or subjective in nature. The remaining 2 questions will be asked from different units of the syllabus, and each question will carry 5 marks. Internal choices will be available for each question. It will be compulsory for the students to answer a total of three questions.

TOTAL MARKS: 20 (TE)	**TIME: 2hr**
Question Number	**Marks**
Question Number 1(compulsory)	10 Marks
Question Number 2	5 Marks
Question Number 3	5 Marks

SEMESTER-4
MDC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-04	Art of Balanced Living	251/SKT/MD401	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

Course Description:

This course aims to acquaint students with the Art of Living as reflected in classical Sanskrit literature. It introduces philosophical, ethical, and practical approaches to cultivate a balanced and harmonious life. The course integrates insights from texts like the Bhagavad Gita, Hitopadesha, Panchatantra, Yoga literature, and Ayurveda to help students manage themselves and their surroundings. It also emphasizes human resource management, decision-making, emotional intelligence, and value-based living to become more effective and productive in day-to-day life situations.

Learning Objectives

This course aims at getting the students acquainted with the Art of living as found in Sanskrit literature. It also intends to make the students work on human resource management for being more effective and productive in day-to-day life situations.

Unit I

- Method of Self-presentation: Hearing (śravaṇa), Reflection (manana) & meditation (nididhyāsana) - (Bṛhadāraṇyakopaniṣad, 2.4.5) and Vedantasara
- Concentration: Concept of Yoga: (Yogasūtra, 1.2); Restriction of fluctuations by practice
- (Abhyāsa) and Passionlessness (Vairāgya) :(Yogasūtra, 1.12-16)

Unit II

- Eight aids to Yoga (Aṣṭāṅgayoga): (Yogasūtra - 2.29, 30, 32, 46, 49, 50; 3.1-4).
- Yoga of action (kriyāyoga): (Yogasūtra, 2.1)
- Four distinct means of mental purity (Chittaprasādana) leading to oneness: (Yogasūtra - 1.33)

Unit III

- Refinement of Behaviour: Means of improving behaviour:
- Jñāna-yoga – Gita Ch. II – 14,15,16,19, Ch XIII- 11,12,14,15,16,19,20,21,23,29,31,32
- Dhyāna-yoga – VI – 24 to 27, 30, 32,

Unit IV

- Bhakti-yoga – Gita Ch. IX – 17, 22, 23, 27, 29, 3 4 ; Ch XI – 10,11,12, 13; Ch. - XII – 4, 6 to 12, 20
- Karma : A natural impulse, essentials for life journey, harmony with the universe, an ideal

- Duty and a Metaphysical dictate - Gītā, Ch. – III 5, 8, 10-16, 20 & 21

Essential/recommended readings

1. वेदान्तसारः राममूर्ति शर्मा नैशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ।

2. पातञ्जल योग दर्शन: सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2008.

3. भगवदगीता: गीताप्रैस, गोरखपुर

4. उपनिषद रहस्य, एकादश उपनिषद, महात्मा नारायण स्वामी, गोविन्द राम हासानन्द, दिल्ली

Learning outcomes

After the completion of this course, the learners will be well informed about the various concepts, components and issues propounded by the philosophical and religious literature in Sanskrit

Instructions for the External Examiner:

There will be a total of 4 questions in this question paper. The first question will be compulsory, carrying 14 marks, and will be based on the entire syllabus. This question may be objective or subjective in nature. The remaining 3 questions will be asked from different units of the syllabus, and each question will carry 12 marks. Internal choices will be available for each question. It will be compulsory for the students to answer a total of four questions.

TOTAL MARKS: 50 (TE)	**TIME: 2hr**
Question Number	**Marks**
Question Number 1(compulsory)	14 Marks
Question Number 2	12 Marks
Question Number 3	12 Marks
Question Number 4	12 Marks

SEMESTER-4

AEC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-03	**व्यावहारिक संस्कृत-3**	251/HS/ AE401	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

पाठ्यक्रम विवरण:

पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में उन्नत स्तर की संवादात्मक, लेखन, पठन एवं श्रवण क्षमता से समृद्ध करना है। यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा के व्यावहारिक प्रयोग पर केन्द्रित है, जिससे छात्र औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थितियों में संस्कृत का सुगठित उपयोग कर सकें। विद्यार्थियों को संस्कृत में अनुच्छेद लेखन, संवाद प्रस्तुति, भाषण, तथा समाचार पठन का अभ्यास कराया जाएगा। यह स्तर पूर्ववर्ती दो स्तरों पर आधारित है तथा छात्रों को दैनिक जीवन के आधुनिक प्रसंगों में संस्कृत के व्यवहार में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अग्रसर करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- विद्यार्थियों को संस्कृत में संवाद, लेखन एवं श्रवण की उन्नत क्षमता प्रदान करना।
- संस्कृत गद्य-पद्य के माध्यम से संप्रेषण कौशल का विकास करना।
- संस्कृत में अनुवाद, भाषण, वर्णन, अनुच्छेद लेखन आदि के माध्यम से व्यवहारिक दक्षता प्राप्त कराना।
- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के व्यवहारिक प्रयोग में दक्ष बनाना।
- विद्यार्थियों को औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रसंगों में संस्कृत में अभिव्यक्ति हेतु तैयार करना।
- संस्कृत में समाचार, भाषण, संवाद आदि के माध्यम से समसामयिक विषयों पर प्रस्तुति की क्षमता विकसित करना।
- संस्कृत के प्रति रुचि, आत्मविश्वास एवं निरंतर व्यवहारशीलता का विकास करना।

इकाई-1: संवाद कौशल (Conversation Skills)

- संस्कृत में दैनिक जीवन के उन्नत संवाद:
  - कार्यालय, पुस्तकालय, बैंक, बाज़ार, अस्पताल, यात्रा आदि
  - प्रश्नोत्तर शैली, आदान-प्रदान के वाक्य
  - औपचारिक एवं अनौपचारिक शैली में वार्तालाप
  - श्रव्य सामग्री पर आधारित अभ्यास (संस्कृत ऑडियो क्लिप/कहानियाँ)

इकाई-2: लेखन अभ्यास (Writing Practice)

- अनुच्छेद लेखन (Paragraph Writing) - 100-150 शब्द
- पत्र लेखन - औपचारिक / अनौपचारिक
- सूचनाओं का लेखन (Notice Writing)
- बधाई/आमंत्रण/प्रार्थना-पत्र आदि का लेखन

इकाई-3: संस्कृत समाचार एवं संवाद (Contemporary Use of Sanskrit)

- संस्कृत में समाचार प्रस्तुति का प्रारंभिक अभ्यास
- आकाशवाणी/दूरदर्शन शैली में संवाद
- संस्कृत में भाषण देना: (1-2 मिनट का लघु भाषण)
- दैनिक समाचारों का संस्कृत अनुवाद (सरल)

मुख्य ग्रन्थ-

1. रचनानुवाद कौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृत वार्तालाप (Sanskrit Vartalap) - प्रो. श्यामसुंदर मिश्र
3. संस्कृत भाषा सीखें (Learn Sanskrit Language) - स्वामी श्रीचरण
4. संस्कृत व्यवहारकौशल (Sanskrit Vyavaharakoushal) - डॉ. गिरीश पाण्डेय
5. संस्कृत संवाद प्रबोधिनी (Sanskrit Samvad Prabodhini) - डॉ. विनोद कुमार
6. संस्कृत व्यावहारिक शिक्षा (Sanskrit Practical Education) - प्रो. रवि शंकर शर्मा
7. संस्कृत संवाद साधना (Sanskrit Samvad Sadhana) - स्वामी त्रिपुरसुंदरी
8. व्यवहारिक संस्कृत (Practical Sanskrit) - डॉ. रामकृष्ण शर्मा
9. **संवादिनी"** - संस्कृत संवाद आधारित अभ्यास पुस्तक
10. **AIR संस्कृत समाचार (Audio Reference)**
11. चयनित श्लोक / सूक्तियाँ / संवाद उदाहरण (श्रीमद्भगवद्गीता, हितोपदेश, पंचतंत्र)

पाठ्यक्रम परिणाम:

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के उपरांत विद्यार्थी:

- औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रसंगों में संस्कृत में संवाद करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत में अनुच्छेद, पत्र, सूचना आदि लेखन कार्यों को शुद्ध एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।
- श्रवण एवं पठन सामग्री को समझकर उत्तर देने तथा उसका विश्लेषण करने में दक्ष होंगे।
- संस्कृत में लघु भाषण, संवाद प्रस्तुति तथा समाचार पठन जैसी व्यावहारिक गतिविधियों में भाग लेने में आत्मविश्वास प्राप्त करेंगे।

- संस्कृत भाषा के प्रति व्यवहारिक दृष्टिकोण एवं रुचि का विकास करेंगे, जिससे वह शिक्षण, अनुवाद, या मंच प्रस्तुति जैसे क्षेत्रों में भी उपयोग कर सकें।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 15 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	15 अंक
द्वितीय प्रश्न	10 अंक
तृतीय प्रश्न	10 अंक